JANUARY 2022

1

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26 REPUBLIC DAY	27	28	29
30	31					

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

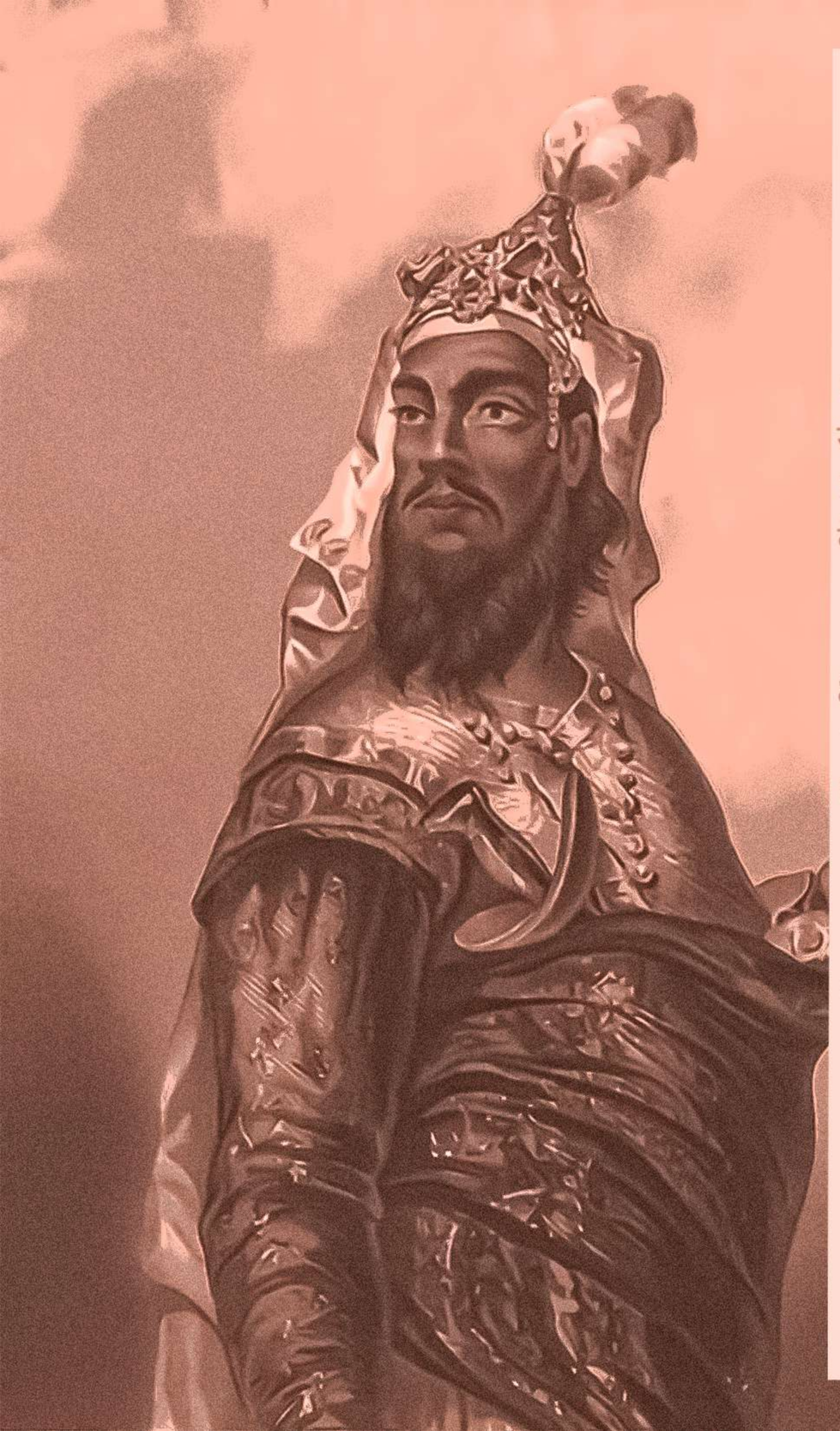

वीर कुंवर सिंह

एक तरफ जहाँ आज़ादी के लिए नौजवानों का रक्त उमड़ रहा था उस दौरान 80 साल का एक बहादुर ज़मींदार जिसने अपनी उम्र की परवाह किए बिना अपनी शान-ओ-शौकत को ठुकराते हुए अंग्रेज़ी सत्ता के खिलाफ तलवार उठा ली। जोश से भरपूर बाबू कुंवर सिंह जब अपनी तेज़ तलवार लिए युद्ध के लिए जाते तो विरोधी अंग्रेजी सेना में डर फैल जाता था। उनके कुशल नेतृत्व और युद्ध कौशल से मरते दम तक अंग्रेज़ उनसे डरते रहे। 1857 की क्रांति में जब मेरठ, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, झाँसी और दिल्ली में आज़ादी की अलख जग उठी उसी समय वीर कुंवर सिंह ने अपनी सेना के साथ बिहार के आटा से लेकर उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़, बनारस, बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर और मध्य प्रदेश के टीवा तक बड़े इलाके से अंग्रेज़ी सेना को खदेड़ दिया।

80 साल के कुंवर सिंह की बहादुटी और देशभक्ति का अंदाज़ा इस घटना से लगाया जा सकता है। एक बार वे जब बिहार और यूपी की सीमा पर गंगा पार कर रहे थे, तो अंग्रेज़ों की गोली उनकी बाँह में लग गई। तब उन्होंने कहा कि "न तो मुझे अपनी मातृभूमि में अंग्रेज़ पसंद है और न ही अपने शरीर में उनकी गोली" और कुंवर सिंह ने तुरंत अपना हाथ काटकर गंगा में समर्पित कर दिया।

इस उम्र में भी घावों से भरे शरीर के साथ कुंवर सिंह बहादुरी से अंग्रेज़ों से लड़ते रहे। सोचिए एक बुजुर्ग ज़मीदार व्यक्ति जो अपने शानदार महल में रहकर आराम कर सकता था लेकिन उसके अंदर देशभक्ति का ऐसा जज़्बा था कि वह अपने मुख-संसाधनों को ठुकराकर आज़ादी की लड़ाई में उतर गया और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए बिना रुके थके अंग्रेजों से लड़ता रहा।

Born: 13 November 1777,
Died: 26 April 1858

KHUDIRAM BOSE

FEBRUARY 2022

2

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28		30			

[redacted]

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

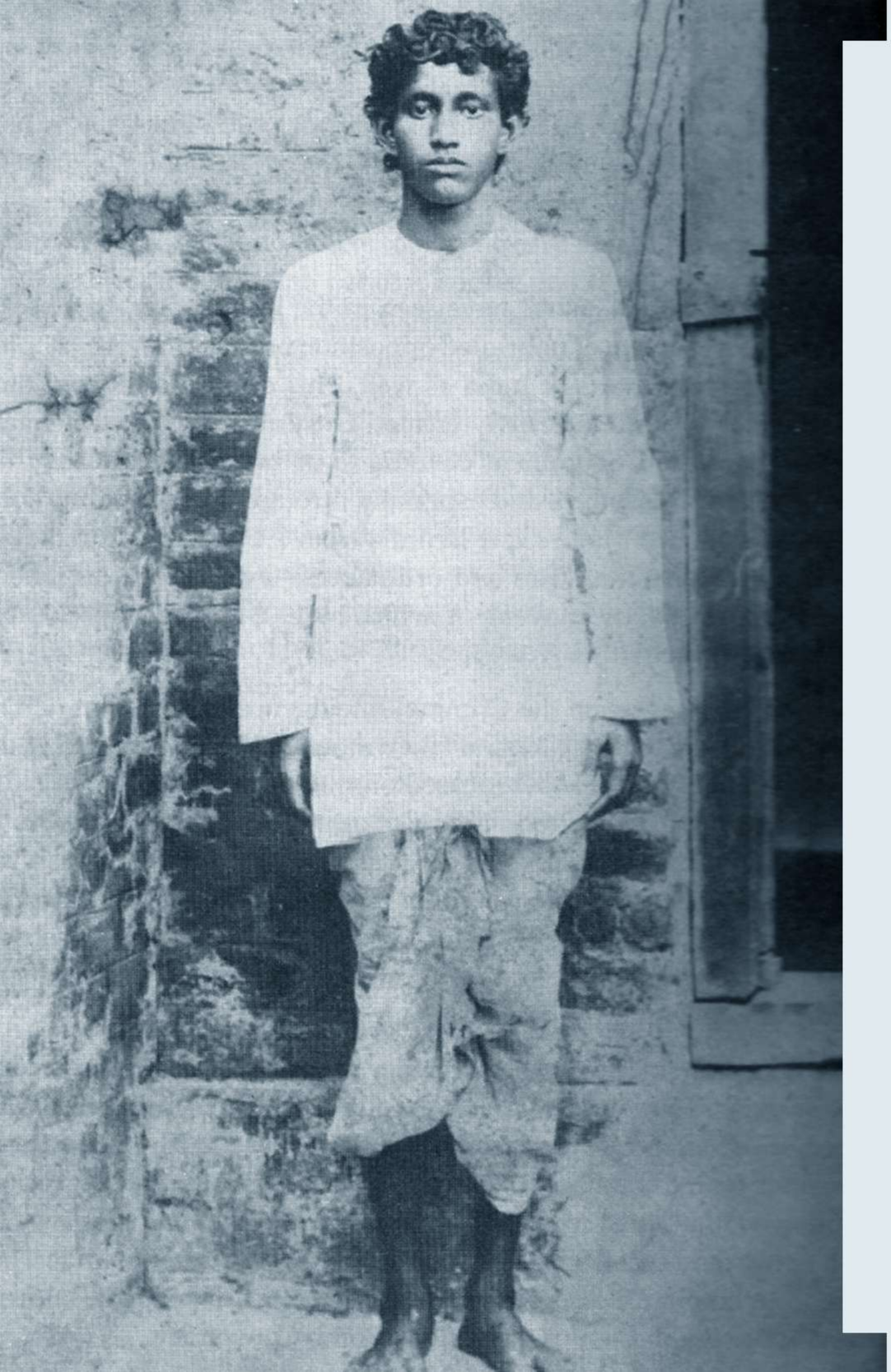

खुदीराम बोस

महान क्रांतिकारी 'खुदीराम बोस' का पूरा नाम खुदीराम त्रिलोकनाथ बोस था। उनका जन्म बंगाल के मिदनापुर जिले के बहुवैनी नामक गांव में **3 दिसम्बर 1889** को हुआ था। उनकी माता का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी एवं पिता का नाम त्रिलोकनाथ बोस था।

खुदीराम बोस को जन्म से ही जोखिम भरे काम पसंद थे। उनके चेहरे पर अपार साहस छलकता था। **1902-03** में ही उन्होंने आज़ादी के संघर्ष में हिस्सा लेने की ठानी थी। वे उस समय के सबसे छोटे क्रांतिकारी थे, जिनमे ऊर्जा कूट-कूट कर भरी हुई थी।खुदीराम के मन में देश को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि नौवीं कक्षा के बाद ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। स्कूल छोड़ने के बाद खुदीराम रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने। **1905** में बंगाल के विभाजन (बंग-भंग) के विरोध में चलाये गये आन्दोलन में उन्होंने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

11 अगस्त 1908 को खुदीराम बोस को फांसी पर चढ़ा दिया गया। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की आज़ादी के लिए न्योछावर कर दिया। जब वे शहीद हुए थे तब उनकी आयु मात्र **19** वर्ष थी। इनकी शहादत से समूचे देश में देशभक्ति की लहर उमड़ पड़ी थी।

खुदीराम बोस को आज भी सिर्फ बंगाल में ही नही बल्कि पूरे भारत में याद किया जाता है। उन्हें 'स्वाधीनता संघर्ष का महानायक' भी कहा जाता है। निश्चित ही जब-जब भारतीय आज़ादी के संघर्ष की बात की जाएगी तब-तब खुदीराम बोस का नाम गर्व से लिया जायेगा। उन्हें इतिहास में हमेशा एक 'अग्नि पुरुष' के नाम से याद किया जायेगा।

Born:3 December 1889,
Died: 11 August 1908

MARCH 2022

3

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18 HOLI	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

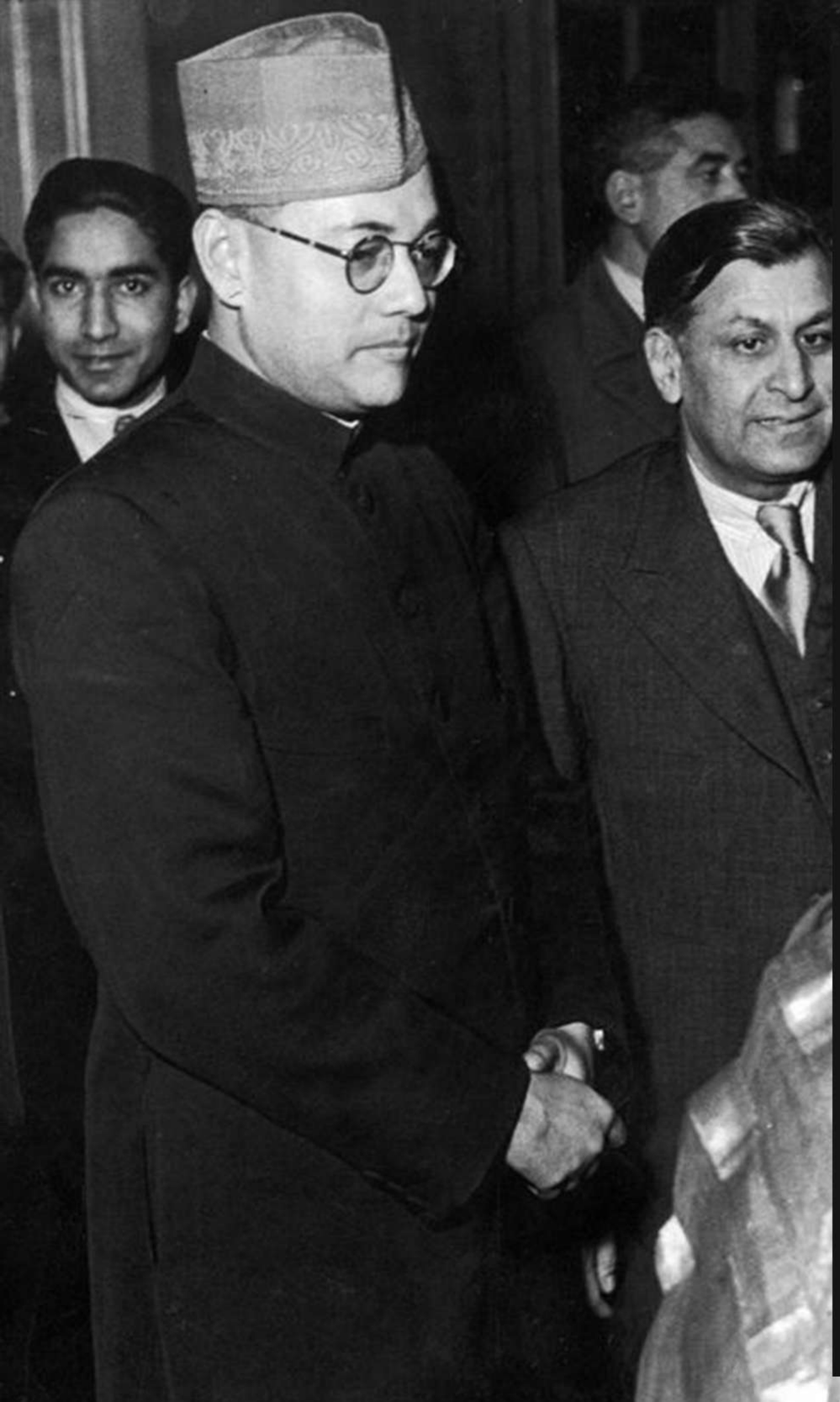

नेताजी

एक अत्यंत प्रतिभावान युवक, जिसके अंदर देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी, पिता के कहने पर 'इंडियन सिविल सर्विसेज की परीक्षा देता है और परीक्षा में टॉप भी कर जाता है। वह किसी जिले में कलेक्टर बनकर ठाट बाट से जीवन जी सकता था। उस समय बहुत-से नौजवान अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल अंग्रेज़ों की सेवा में कर ही रहे थे। लेकिन सुभाष बाबू को यह कतई मंजूर नहीं था। उन्होंने चुना क्रांति का रास्ता। इस रास्ते के लिए उन्होंने नौकरी के लिए लालच नहीं किया और अपने आरामदायक जीवन को छोड़ दिया। आई.सी.एस. अफसर की अपनी नौकरी पर लात मार दी जो उस समय किसी भारतीय को मिलना एक आसान बात नहीं थी। उसने अपना पूरा टैलेंट अंग्रेज़ों की सेवा करने के बजाय देश सेवा में लगा दिया। 'आज़ाद हिंद फौज' तैयार की और लाखों भारतीयों को इससे जोड़ा। उन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को इतना बेबस कर दिया कि अंग्रेज़ों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। नेताजी सुभाषचंद्र बोस का प्रसिद्ध नारा ' तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आज़ादी दूंगा' सुनकर देश के युवाओं में ही नहीं बल्कि बुजुर्गों के खून में भी उबाल आ जाता था। उनके क्रांतिकारी तेवरों से ब्रिटिश राज हिल चुका था।

ब्रिटिश हुकूमत के मन में नेताजी का इतना डर भरा था कि **1940** में जब नेताजी जेल में भूख हड़ताल पर बैठे और उनकी हालत बिगड़ने लगी तो ब्रिटिश पुलिस उन्हें घर छोड़ आई क्योंकि यदि नेताजी को कुछ हो जाता तो ब्रिटिश हुकूमत लाखों भारतीयों के गुस्से का सामना नहीं कर पाती।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार ने सभी बड़े भारतीय नेताओं को जेलों में डाल दिया। आंदोलन को बुरी तरह कुचलने का प्रयास किया। उस दौरान केवल नेताजी एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके नेतृत्व में आज़ाद हिंद फौज ने अंडमान-निकोबार द्वीप पर कब्ज़ा कर लिया। ब्रिटिश राज के रहते हुए उन्होंने भारत की पहली आज़ाद सरकार बनाई थी, जिसे कई देशों की तरफ से मान्यता भी मिल गई थी। निटाशा के उस दौर में भी सुभाष चंद्र बोस के शौर्य ने जनता को जोश से भर दिया था। किसी भी क्रांति के लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी होता है जोश। इसी जोश का परिणाम था कि भारत अगले 5 सालों में आज़ाद हो गया।

Born: 23 January 1897,
Died: 18 August 1945

APRIL 2022

4

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14 MAHAVIR JAYANTI	15 GOOD FRIDAY	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

शहीद भगत सिंह

दुनिया भर में जब भी अपने देश के लिए जान कुर्बान करने वाले नौजवानों की बात आती है तो शहीद-ए-आज़म सरदार भगत सिंह का नाम सबसे पहले लिया जाता है। हो भी क्यों ना? केवल 23 साल की उम्र में, जिस समय हमारे यहाँ बच्चे कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर रहे होते हैं, उस उम्र में उन्होंने अपने विचारों ओर अपनी देशभक्ति के दम पर अंग्रेज़ी सरकार की जड़ें हिलाकर रख दी थी।

आज भारत में ही नहीं, दुनिया भर में नोजवान शहीद भगत सिंह के जीवन से प्रेरणा लेते हैं और उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। भगत सिंह जैसा बनना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए हमें उनके बचपन को समझना बहुत जरूरी है। उनके बचपन से जुड़ा हुआ एक बहुत मशहूर किस्सा है जो हर बच्चे को जानना और समझना ज़रूरी है। यही किस्सा हमें यह बताता है कि देशभक्ति का भाव हमारे अंदर सिर्फ बड़े होकर नहीं आता बल्कि बचपन से ही इसका होना कितना ज़रूरी है।

एक बाट की बात है। भगत सिंह के चाचा घर में एक बंदूक लेकर आए। उन्होंने अपने चाचा जी

Born: 23 January 1897,
Died: 18 August 1945

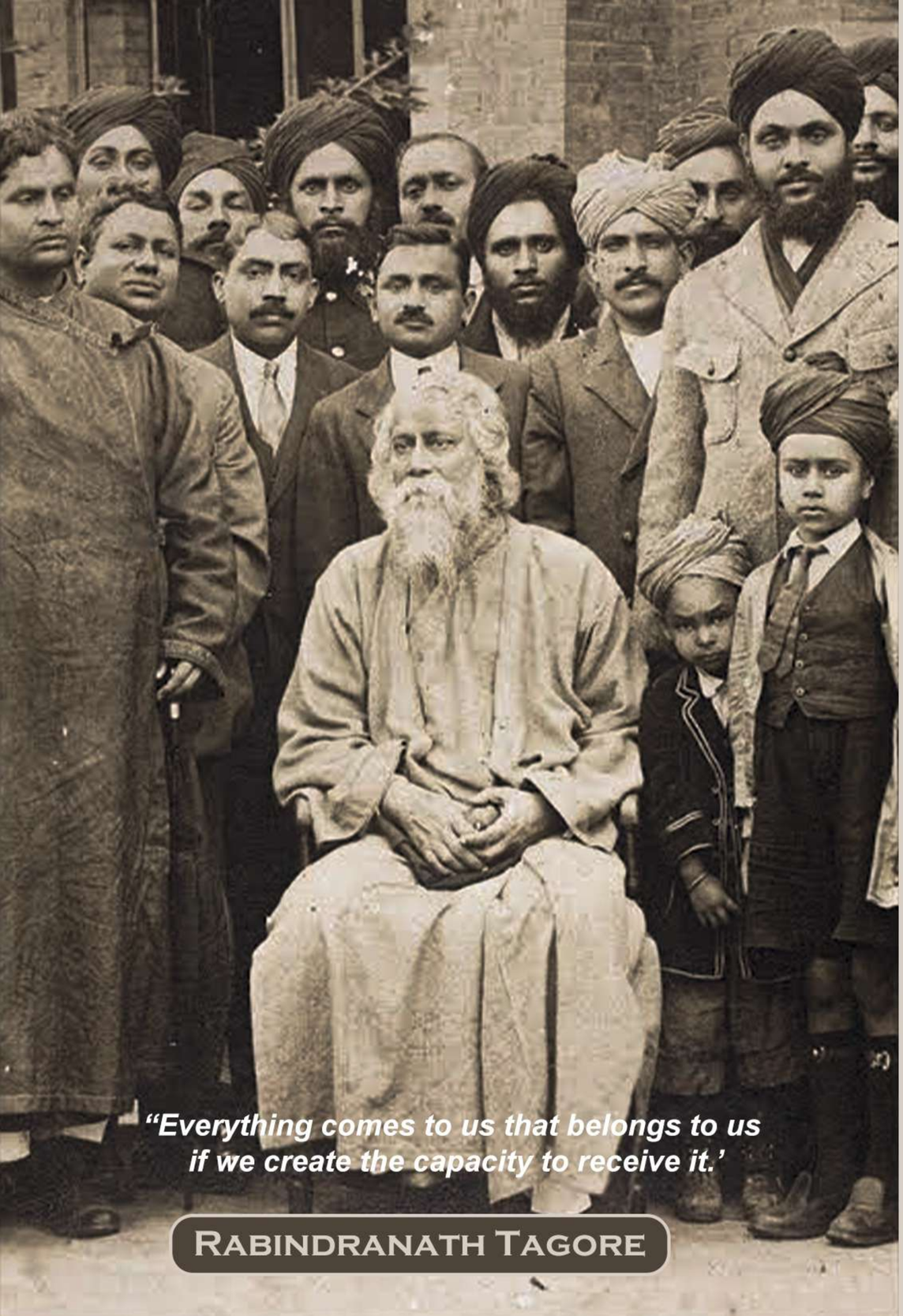

MAY 2022

5

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3 EID UL FITR	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16 BUDDHA PURNIMA	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

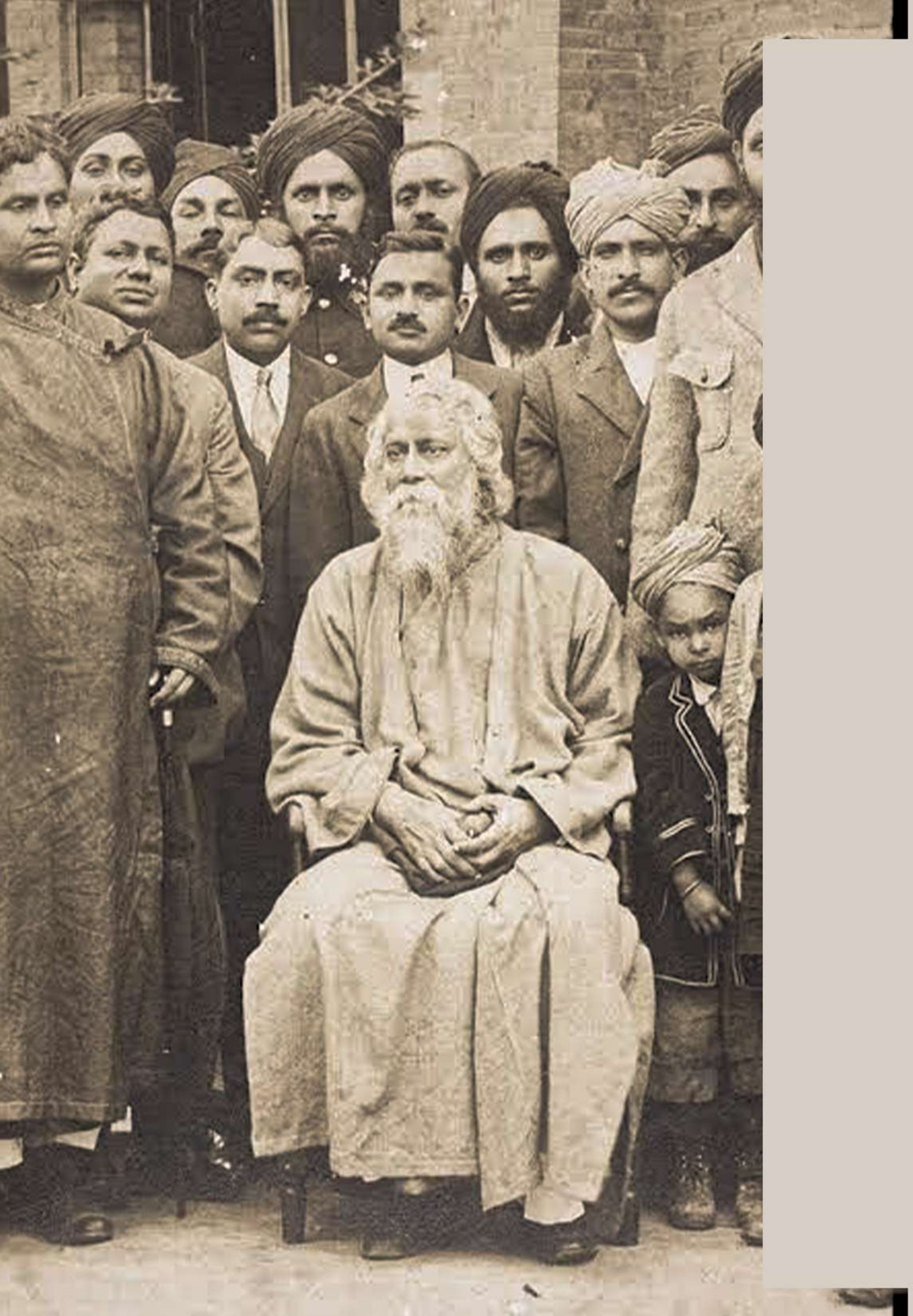

रबीन्द्रनाथ टैगोर

आज़ादी की लड़ाई में बहुत से जाने-माने देशभक्त ऐसे भी रहे जिन्होंने अपनी रचनात्मकता और कलम की आवाज़ से आज़ादी की लड़ाई की गूंज को जनता के दिलों-दिमाग में गुंजा दिया। गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर का नाम इस पंक्ति में सबसे आगे आता है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेज़ों की दमनकारी नीति और जलियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में सर' की उपाधि त्याग दी थी। इससे उन्होंने अंग्रेज़ों का मनोबल तोड़ने का काम किया और असर यह हुआ कि भारत के जनसाधारण तक रबीन्द्रनाथ टैगोर का अंग्रेज़ों की दमनकारी नीति के विरोध का संदेश पहुँच पाया। भारतीयों में अंग्रेज़ों के प्रति असंतोष का वातावरण फैलाने में यह एक महत्वपूर्ण कदम था ।

इसके पहले भी 16 अक्तूबर 1905 को गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेजों की फूट डालो टाज कटरो की नीति का जवाब रक्षाबंधन की राखी के रूप में दिया था। भारत के पूर्वोत्तर में असम, बंगाल आदि क्षेत्रों की बड़ी जनसंख्या पर राज करने में अंग्रेज़ों को खासी दिक्कत आ रही थी इसलिए अंग्रेज़ों ने इन क्षेत्रों को हिंदू और मुसलमान के आधार पर बॉटना शुरू कर दिया था। इसके जवाब में गुरुदेव ने रक्षाबंधन उत्सव का आयोजन किया। उनके आह्वान पर लोगों के जुलूस के जुलूस राखी लेकर निकले और जो भी रास्ते में मिलता उसे राखी बाँधते चले जाते। उनके हाथ में टाखियों का गट्ठर होता था। गुरुदेव ने हिंदुओं और मुसलमानों से आह्वान किया था कि वे राखी बाँधकर एक दूसरे की रक्षा कि शपथ लें और अंग्रेज़ों की चाल में न फँसे ।
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अगर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो रबीन्द्रनाथ टैगोर ने बांग्ला भाषा को माध्यम बनाकर भारतीय लोगों में सांस्कृतिक चेतना जगाने का प्रयास किया। अगर हम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को साहित्यिक आंदोलन की दृष्टि से देखें तो रबीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय जनमानस को अपनी लेखनी के माध्यम से जागरूक बनाया। उस समय में लेखनी का एक विशेष महत्व था क्योंकि केवल यही एक ऐसा साधन था जिसके द्वारा संवाद और विचार अभिव्यक्ति को दूरदराज़ रह रहे लोगों तक पहुँचाया जा सकता था।

हम सभी यह पहले से जानते ही हैं कि रबीन्द्रनाथ टैगोट एशिया महाद्वीप के प्रथम व्यक्ति हैं। जिन्हें नोबेल प्राइज से सम्मानित किया गया। उनकी दो रचनाएँ ऐसी थीं जो बाद में जाकर दो देशों (भारत और बांग्लादेश) का राष्ट्रगान बनीं।

Born: 7 May 1861,
Died: 7 August 1941

“If defeated and killed on the field of battle,
we shall surely earn eternal glory and salvation"

RANI LAKSHMIBAI

JUN 2022

6

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

Rani laxmi bai

बुंदेले हर बोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।

झाँसी की महारानी, रानी लक्ष्मीबाई का नाम आज देश के बच्चे-बच्चे के लिए बहादुरी की मिसाल है। लेकिन जा सोचकर देखिए आज से करीब पौने दो सौ साल पहले केवल 22-23 साल की उम्र में, यानी जिस उम्र में आजकल बच्चियाँ कॉलेज में पढ़ाई कर रही होती हैं, उस उम्र में झाँसी की रानी अंग्रेज़ों से लोहा ले रही थीं। सिर्फ इसलिए कि उन्हें भारत माता प्यारी थी। इसलिए क्योंकि उन्हें अपने लोगों पर अंग्रेज़ों का ज़ुल्म बर्दाश्त नहीं था। उन्हें यह बर्दाश्त नहीं था कि कोई विदेशी आकर हम पर हुक्म चलाए ।

रानी लक्ष्मीबाई बचपन से ही अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थीं। कम उम्र में ही उन्होंने घुड़सवारी करना और हथियार चलाने सीख लिए थे। शादी के बाद जब वे झाँसी आई तो कुछ समय के अंदर ही उन्होंने झाँसी में एक महिला सेना तैयार कर ली थी। पति की मृत्यु के बाद जब उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ तरह-तरह की चाल चलकर झाँसी पर अपना कब्ज़ा करना चाहते हैं तो उन्होंने अंग्रेज़ों के सामने झुकना नहीं बल्कि उनसे लड़ना कबूल किया।

उन्होंने अंग्रेज़ों के सामने घुटने टेकने की जगह अपने लोगों की रक्षा के लिए बहादुरी से लड़ना कबूल किया। वे खुद अपनी सेना का नेतृत्व करती थीं और अपने छोटे बच्चे को पीठ पर बाँधकर, अपने साथ घोड़े पर बिठाकर, हाथ में तलवार लेकर अंग्रेज़ों की सेना पर कहर बनकर टूट पड़ती थीं। जिस समय देशभर में अंग्रेज़ों का अत्याचार अपने उफान पर था और अंग्रेज़ एक के बाद एक शहरों पर कब्ज़ा करते चले जा रहे थे, वैसे में करीब 5 साल तक, अपनी आखिरी साँस तक झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की अपनी जनता को अंग्रेज़ों के ज़ुल्मों से बचाकर रखा। 30 साल की उम्र में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ों से लड़ते हुए शहीद हुई।

आज जब हम आज़ाद हवा में साँस ले रहे हैं, 75 साल पहले अंग्रेज़ देश छोड़कर भाग चुके हैं, वैसे में यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि आज से करीब पौने दो सो साल पहले इस धरती पर 25 साल की एक युवा क्षत्राणी किन हालात में अंग्रेज़ों से लोहा ले रही थीं। वह भी तब जबकि उनके पति की इतनी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी। और कैसे उनमें इतनी हिम्मत
आती थी कि वे अपने पुत्र को घोड़े पर बैठाकर अंग्रेज़ों की सेना के बीच खुद पहुँच जाती थीं। आज जब हम आज़ाद है, वीरांगना झाँसी की रानी को याद करते हुए हम इतना संकल्प तो ले ही सकते हैं कि अगर देश के लिए कुछ करने की नौबत आए, देश के लोगों के लिए कुछ करने की नौबत आए तो हम अपने सुख-सुविधाओं का, परिवार का, परिस्थितियों का बहाना नहीं मुनेंगे बल्कि हिम्मत से देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार होंगे। बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए तैयार होंगे।

Born: 19 November 1828,
Died: 18 June 1858

BIRSA MUNDA

JULY 2022

7

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10 BAKRID	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

बरिसा मुंडा

देश की आज़ादी में हर भारतीय ने अपना योगदान दिया, चाहे वे शहरों में रह रहे लोग हों या जंगलों में रह रहे आदिवासी । ऐसे ही एक आदिवासी नेता थे बिरसा मुंडा। सन 1895 से 1900 तक बिरसा मुंडा ने अपना महाविद्रोह 'ऊलगुलान' चलाया। अंग्रेज़ आदिवासियों को लगातार जल-जंगल-ज़मीन यानी उनके प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल कर रहे थे पर बिरसा मुंडा ने इसके खिलाफ आवाज़ उठाई और अंग्रेज़ों को कड़ी चुनौती दी। अंग्रेज़ों ने आदिवासियों को जंगल के अधिकार से वंचित करने के लिए नया जंगल कानून बनाया और उनपर ज़बरदस्ती टैक्स थोप दिया। उन्होंने ज़मींदारों और महाजनों के साथ मिलकर आदिवासियों का शोषण करना शुरू कर दिया। इस शोषण के खिलाफ बिरसा ने विद्रोह किया और एक नई लड़ाई शुरू की।

यह कोई बगावत नहीं थी बल्कि यह आदिवासी स्वतंत्रता और संस्कृति को बचाने की लड़ाई थी। इस संघर्ष में बिरसा ने हमारा देश, हमारा राज का नारा दिया। बिरसा के साथ हज़ारों आदिवासी जुड़ गए। फिर शुरू हुई तीट और भाले की अंग्रेज़ी बंदूकों से लड़ाई। संसाधन के मामले में यह लड़ाई बराबरी की नहीं थी लेकिन अपनी ज़मीन, अपने लोगों और अपने स्वाभिमान के लिए आदिवासियों ने बिरसा मुंडा के साथ मिलकर जो आत्मविश्वास दिखाया वह अंग्रेज़ी बंदूकों पर भारी पड़ा। देशभक्ति के आगे अंग्रेज़ी बंदूकें कमज़ोर पड़ गई। अंग्रेज़ी सरकार ने बिरसा को दबाने की हर संभव कोशिश की लेकिन आदिवासियों के संगठन के आगे उन्हें असफलता ही मिली। 1897 से 1900 के दौरान आदिवासियों और अंग्रेज़ों के बीच

कई लड़ाइयाँ हुई और हर बार अंग्रेज़ों ने मुँह की खाई। बिरसा मुंडा के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान और आदिवासियों की ज़िंदगी में बदलाव लाने के कारण उन्हें आज भी याद किया जाता है।

Born: 15 November 1875,
Died: 9 June 1900

VINAYAK DAMODAR SAVARKAR

AUGUST 2022

8

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9 MUHARRAM	10	11	12	13
14	15 INDEPENDENCE DAY	16	17	18	19 KRISHNA JANMASHTAMI	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

वीर सावरकर

वीर सावरकर का पूरा नाम विनायक दामोदर सावरकर था। वीर सावरकर एक स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिक विचारक, समाज सुधारक, मराठी कवि और लेखक थे। इसी तरह, वह एक हिंदू दार्शनिक और भाषा शुद्धि और लिपि शुद्धि आंदोलन के संस्थापक थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा नासिक के शिवाजी स्कूल में हुई। जब वह केवल नौ वर्ष के थे, तब उनकी मां का कालरा से निधन हो गया था। कुछ साल बाद, 1899 में उनके पिता की प्लेग से मृत्यु हो गई। उसके बड़े भाई ने तब परिवार की देखभाल की।

वे बचपन से ही बहुत बुद्धिमान थे। वे अलंकारिक कविता में पारंगत थे। उनकी प्रतिभा, स्वदेशी, स्वतंत्रता का भजन, जो उन्होंने तेरह साल की उम्र में लिखा था, उनकी प्रतिभा की गवाही देता है। मार्च 1901 में यमुनाबाई से शादी करने के बाद, सावरकर ने 1902 में फर्ग्यूसन कॉलेज में प्रवेश लिया। फर्ग्यूसन कॉलेज में पढ़ाई के दौरान उन्होंने विदेशी सामानों का बहिष्कार शुरू किया, पुणे में विदेशी कपड़ों की होली जलाई और दोस्तो का संगठन बनाया।

१८९७ में भारत में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह अब सावरकर द्वारा लिखा गया एक साधारण इतिहास है। यह विद्रोह मात्र विद्रोह है। अंग्रेजी इतिहासकारों के इस निष्कर्ष का सावरकर ने खंडन किया था। मदनलाल ढींगरा ने सावरकर के बड़े भाई बाबाराव सावरकर को ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई मौत की सजा के प्रतिशोध में लंदन में कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या कर दी।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर को बदनाम करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें अंडमान में कैद कर दिया। हर तरह की तड़पती चट्टानों में फँसकर उसने नारियल की भूसी को कुचलने की मेहनत को तेल की चक्की में डाल दिया। इस मरणासन्न पीड़ा को सहने के बावजूद उनके मन में एक ही लक्ष्य था। उन्हें अंडमान जेल में प्रताड़ित किया गया था। लेकिन इतनी नरक पीड़ा सहने के बावजूद उन्होंने ब्लैक वाटर जैसी खूबसूरत किताब लिखी। यह गाना लोगों के जेहन में हमेशा रहेगा।

अंडमान से रिहा होने के बाद, सावरकर को अंग्रेजों द्वारा रत्नागिरी में स्थानांतरित कर दिया गया था। हिंदू धर्म जाति व्यवस्था की असमानता का समर्थन करता है। इसलिए सावरकर ने हिन्दुओं को एक करने के लिए धर्मशास्त्र की तलवार उठाई, इस बात की चिंता किए बिना कि उनके लेखन से किसी को ठेस पहुंचेगी, उन्होंने अंधविश्वास और जातिगत भेदभाव की तीखी आलोचना की।

उन्होंने रत्नागिरी में अपने आवास में कई सामाजिक सुधार किए और लगभग पांच सौ मंदिर अछूतों के लिए खोले गए। अनेक अंतर्जातीय विवाह हुए, अनेक भोज आयोजित किए गए, फिर सभी के लिए एक पतित पावन मंदिर प्रारंभ किया गया और सभी के लिए एक सामान्य भोजनालय प्रारंभ किया गया। पतितपावन मंदिर में सभी जातियों के लोगों ने प्रवेश किया। सावरकर को 10 मई, 1937 को बिना शर्त रिहा कर दिया गया। वे अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष बने। वह भारत छोड़ो आंदोलन का हिस्सा बने।26 फरवरी, 1966 को देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देते हुए उनका निधन हो गया।

Born: 28 May 1883,
Died: 26 February 1966

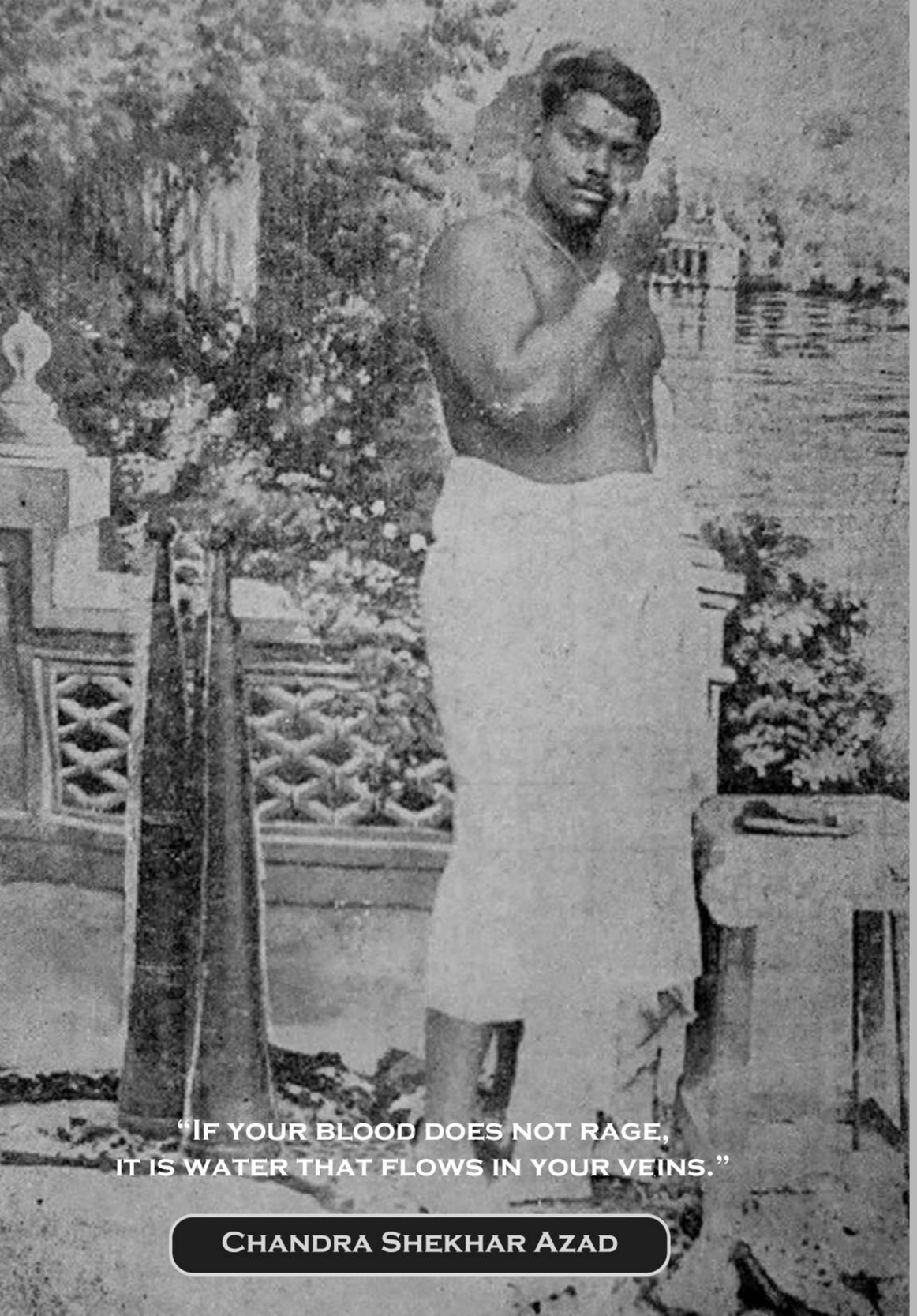

SEPTEMBER 2022

9

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

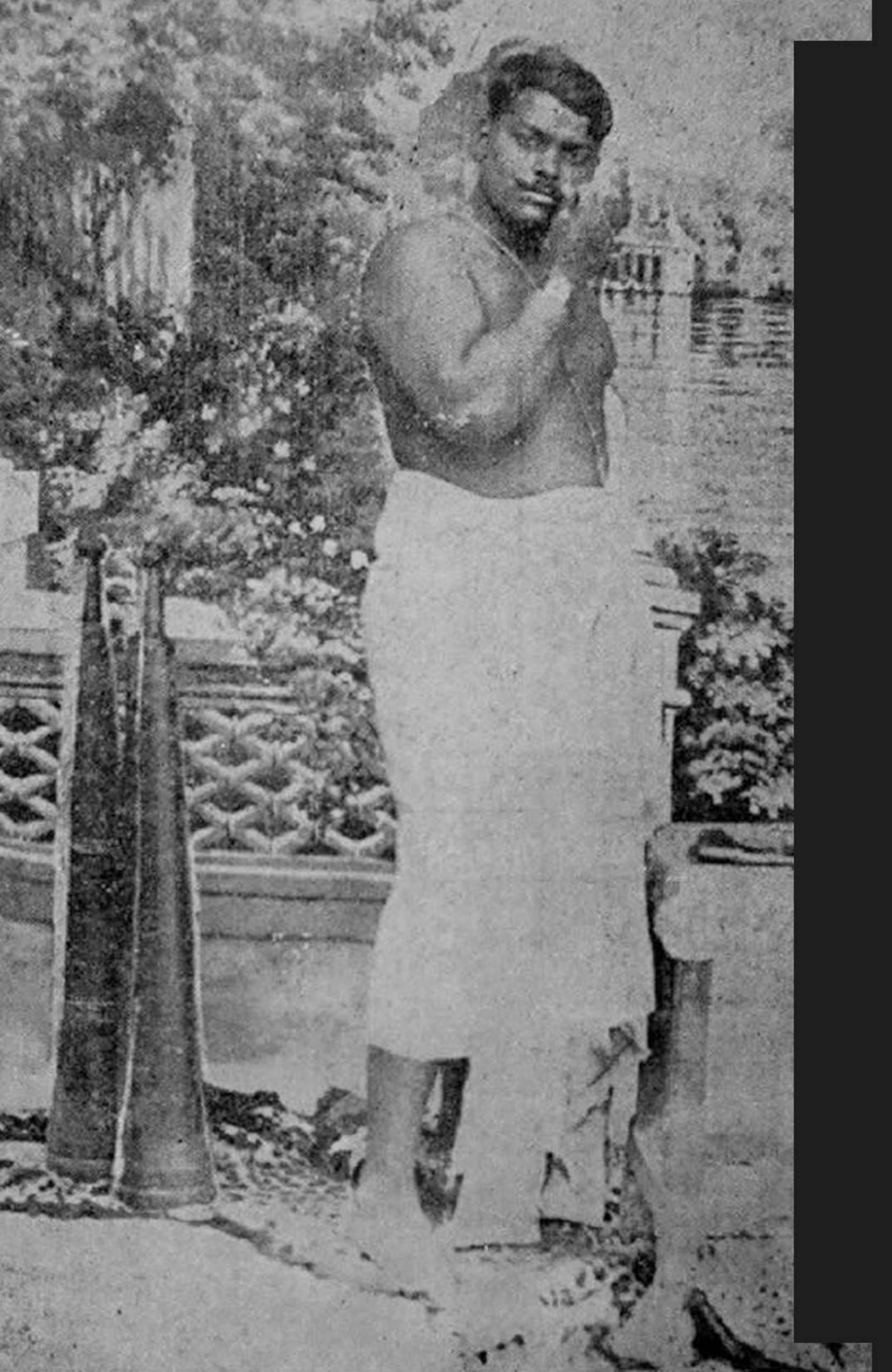

Chandra Shekhar Azad

आज़ादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों के साथ एक प्रदर्शन में शामिल होने पर पुलिस ने 14 साल के एक बच्चे को गिरफ्तार कर लिया और उसे जज के सामने पेश किया गया। यहाँ जज ने उस बच्चे से उसका नाम पूछा तो पूरी दृढ़ता से उस बच्चे ने जवाब दिया, "मेरा नाम आज़ाद है।" पिता का नाम पूछने पर ज़ोर से बोला, "स्वतंत्रता" और पता पूछने पर बोला- "जेल"। इस पर जज नाराज़ हो गया और बच्चे को सरेआम 15 कोड़े लगाने की सजा सुनाई। जब उस बच्चे की पीठ पर कोड़े बरस रहे थे तो उसके मुँह पर कोई शिकन नहीं थी। वह तो बस एक स्वर में वन्दे मातरम कहे जा रहा था। यह बच्चा चंद्र शेखर आज़ाद के नाम से पहचाना जाने लगा। ये वही चंद्रशेखर आज़ाद थे, जिनके नाम मात्र से अंग्रेज़ी पुलिस काँपने लगती थी।

चंद्रशेखर आज़ाद ने 1928 में लाहौर में ब्रिटिश पुलिस ऑफिसर सॉन्डर्स को गोली मारकर • लाला लाजपत राय की मौत का बदला लिया था। उन्होंने सरकारी खजाने को लूटकर क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन जुटाना शुरू कर दिया। उनका मानना था कि यह धन भारतीयों का ही है जिसे अंग्रेज़ों ने लूटा है। रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में आज़ाद ने काकोरी

कांड (1925) में सक्रिय भाग लिया था। चंद्रशेखर आज़ाद कहते थे कि दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आज़ाद ही रहे हैं, आज़ाद ही रहेंगे उनके इस नारे को हर क्रांतिकारी युवा रोज़ दोहराता था। वे जिस शान से मंच से बोलते थे, हज़ारों युवा उनके साथ देश के लिए जान लुटाने को तैयार हो जाते थे।

7 फरवरी, 1931 के दिन चंद्रशेखर आज़ाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अपने एक साथी के साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहाँ अंग्रेज़ों ने उन्हें घेर लिया। चंद्रशेखर आज़ाद ने अपने दोस्त को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेज़ों का अकेले ही सामना करते रहे। अंत में अंग्रेजों की एक गोली उनकी जाँघ में लग गई। आज़ाद की बंदूक में एक गोली ही बची थी। चंद्रशेखर आजाद ने पहले ही यह प्रण किया था कि वह कभी भी ज़िंदा पुलिस के हाथ नहीं आएँगे। इसी प्रण को निभाते हुए उन्होंने वह बची हुई गोली खुद को मार ली। पुलिस के अंदर चंद्रशेखर आज़ाद का इतना भय था कि किसी की भी उनके मृत शरीर के पास जाने तक की हिम्मत नहीं हुई। उनके शरीर पर गोली चलाकर और पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद ही पुलिस चंद्रशेखर आज़ाद के पास गई।

Born: 23 July 1906,
Died: 27 February 1931

OCTOBER 2022

10

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					2	1
2 Mahatma Gandhi's Birthday	3 Dussehra Maha Ashtami	4 Dussehra Maha Navami	5 Dussehra Vijayadashami	6 Dussehra additional	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24 Diwali (दीपावली)	25	26	27	28	29
30	31					

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

सरोजिनी नायडू

सरोजनी नायडू एक ऐसा नाम है जिन्हें हम सभी ने अपनी किताबों में पढ़ा है। सरोजिनी नायडू उन महिलाओं में शामिल हैं, जिन्होंने भारत को आज़ादी दिलाने के लिए कड़ा संघर्ष किया था। सरोजिनी नायडू को लोग 'भारत कोकिला' के नाम से जानते हैं। स्वतंत्रता सेनानी, कवयित्री और देश की पहली महिला गवर्नर सरोजिनी नायडू ने बचपन में ही अपने हुनर का परिचय दे दिया था। 12 साल की उम्र में सरोजिनी नायडू ने बड़े अखबारों में लेख और कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था। संकटों से बिना घबराए वे एक वीरांगना की भाँति गाँव-गाँव घूमकर देश प्रेम का अलख जगाती रहीं और देशवासियों को उनके कर्तव्य की याद दिलाती रहीं। उनके भाषण जनता के हृदय को झकझोर देते थे और देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित करते थे।

मोजनी नायडू को बहुत-सी भाषाओं का ज्ञान था। जगह के अनुसार वे अपना भाषण अंग्रेज़ी, हिंदी, बंगला या गुजराती में देती थीं। लंदन की सभा में अंग्रेज़ी में बोलकर इन्होंने वहाँ उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

सरोजिनी नायडू, गांधी जी से सन 1914 में लंदन में मिलीं। इसके बाद उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ और वे भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। दांडी मार्च के दौरान गांधी जी के साथ आगे बढ़कर चलने वालों में सरोजनी नायडू भी शामिल थीं। उन्होंने जीवन-पर्यंत गांधी जी के विचारों और मार्ग का अनुसरण किया। आज़ादी की लड़ाई में तो उनका अहम योगदान था ही, भारतीय समाज में जातिवाद और लिंग-भेद को मिटाने के साथ-साथ उन्होंने समाज के विकास के लिए भी काम किया।

Born: 13 February 1879,
Died: 2 March 1949

LALA LAJPAT RAI | BAL GANGADHAR TILAK | BIPIN CHANDRA PAL

LAA
BALL
PALL

NOVEMBER 2022

11

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

GURU NANAK BIRTHDAY

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

लाला लाजपत राय

एक क्रांतिकारी जिसने देश की आज़ादी के लिए अपनी जान तक कुर्बान कर दी। जब साइमन कमीशन का विरोध करते समय उनपर ब्रिटिश पुलिस की लाठियाँ चली तो उन्होंने कहा " मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी और वाकई इस चोट के साथ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का कफ़न तैयार होना शुरू हो गया। इस बलिदान ने न जाने कितने उधमसिंह और भगतसिंह तैयार किए जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत को धराशाई कर दिया। शेर-ए-पंजाब के नाम से मशहूर लाला लाजपत राय ने स्वदेशी आंदोलन को पूरे भारत में प्रबलता के साथ चलाया। अंग्रेज़ों में लाला जी के नाम का इतना खौफ था कि 1914 से 1920 तक उन्हें भारत में आने ही नहीं दिया गया। लेकिन लाजपत राय कहाँ रुकने वाले थे। उन्होंने विदेशों से ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान देना जारी रखा।

लाला लाजपत राय ने अमेरिका से यंग इंडिया' पत्रिका का संपादन प्रकाशन किया और न्यूयार्क में 'इंडियन इनफार्मेशन ब्यूरो की स्थापना की। इसके अतिरिक्त दूसरी संस्था इंडिया होमरूल भी स्थापित की। इसका नतीजा यह हुआ कि हजारों की संख्या में युवा उनसे प्रभावित होने लगे।

साल 1920 में जब वह भारत आए तब तक उनकी लोकप्रियता काफी बढ़ चुकी थी। इसी साल वे गांधी जी के संपर्क में आए और असहयोग आंदोलन का हिस्सा बन गए। लाला लाजपत राय के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन पंजाब में जंगल की आग की तरह फैल गया और जल्द ही वे पंजाब का शेट और पंजाब केसरी जैसे नामों से पुकारे जाने लगे। 63 साल की उम्र में भी लाला लाजपत राय इस जोश से क्रांतिकारियों को संगठित और अंग्रेज़ों का विरोध करते थे जैसे 20 साल का कोई युवा हो। इसलिए भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी उन्हें अपनी प्रेरणा मानते थे।

Born: 28 January 1865,
Died: 17 November 1928

बाल गंगाधर तलिक

बाल गंगाधर तिलक के अंदर देशभक्ति की भावना बचपन से ही कूट-कूट कर भरी थी। वीर शिवाजी महाराज के आदर्शों पर चलने वाले तिलक वे पहले क्रांतिकारी थे जिन्होंने पूर्ण स्वराज की माँग की और देश के लोगों को स्वराज का अर्थ समझाया। उनके नारे "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और में उसे लेकर रहूँगा" ने युवाओं में ऐसा जोश और जुनून भर दिया कि पूर्ण स्वराज" सभी क्रांतिकारियों के जीवन का इकलौता उद्देश्य बन गया।

तिलक ने शिक्षा को आज़ादी का सबसे प्रबल हथियार बनाया और पूरे देश में लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने समाचारपत्र के द्वारा अपनी क्रांतिकारी आवाज़ और भारतीय संस्कृति को देश के कोने-कोने में फैलाने का काम किया। उन्होंने देश की जनता को समझाया कि स्वतंत्रता भीख माँगने से नहीं मिलती उसके लिए लड़ना पड़ता है। तिलक के मराठी अखबार 'केसरी' और अंग्रेजी अखबार 'द मराठा' ने लोगों की राजनीतिक चेतना को जगाने का काम शुरू किया था।

अंग्रेज़ों द्वारा जब 1905 ई. में बंगाल का विभाजन किया गया तो तिलक ने इसका ज़बरदस्त विरोध किया और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार की वकालत की। उनके प्रयासों का ही नतीजा था कि देश में जगह-जगह लोग ब्रिटिश सामानों की होली जलाने लगे।

Born: 23 July 1856,
Died: 1 August 1920

बपिनि चन्द्र पाल

अखबार को स्वतंत्रता आंदोलन का हथियार बनाने वाले, अपने लेखों से देश की जनता को ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचार से अवगत करवाने वाले विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर लोगों में स्वदेशी अपनाने की भावना जगाने वाले महान क्रांतिकारी बिपिन चंद्र पाल ने देश के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा देने का काम किया।

ज़मींदार परिवार से होने के बावजूद आराम की ज़िंदगी अपनाने के बजाय उन्होंने क्रांति के रास्ते को चुनना ज़्यादा बेहतर समझा। उनके लिए देश की सेवा करना ज़िंदगी का पर्याय बन गया। उन्होंने बंगाल विभाजन के समय अपने क्रांतिकारी विचारों से स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

बिपिन चंद्र पाल ने भारतीयों के बीच में स्वराज के विचार की भावना का प्रचार किया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की रूपरेखा तैयार की। देश में स्वराज की अलख जगाने के लिए उन्होंने कई अखबार भी निकाले और उनके माध्यम से पूर्ण स्वराज, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी अपनाने की भावना आम जनमानस के अंदर जगाई। उन्होंने अपने क्रांतिकारी विचारों के माध्यम से युवाओं को देश की आज़ादी की लड़ाई में आने के लिए प्रोत्साहित किया।

Born: 7 November 1858,
Died: 20 May 1932

RAM MANOHAR LOHIA

DECEMBER 2022

12

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25 CHRISTMAS DAY	26	27	28	29	30	31

GURU GOBIND SINGH
COUNCIL OF SKILLS AND MANAGEMENT STUDIES

राममनोहर लोहयिा

देशभक्ति केवल एक शब्द नहीं बल्कि एक ऐसी भावना है जो हर उम्र के लोगों में जोश और उत्साह भर देती है। सोचिए, एक दस साल का बच्चा असहयोग आंदोलन में अपना योगदान देने के लिए स्कूल छोड़ देता है। विदेशी कपड़ों को त्यागकर खद्दर पहनना शुरू कर देता है।

राम मनोहर लोहिया में 10 साल की छोटी उम्र से ही देशभक्ति की भावना इतनी कूट-कूटकर भरी थी कि बड़े-बड़े लोग अचंभित हो जाते थे। योग्यता इतनी थी कि केवल 17 साल की उम्र में 'अखिल बंग विद्यार्थी परिषद के सम्मेलन में सुभाषचंद्र बोस के न पहुँचने पर उन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। आज 18 साल की उम्र में जब बच्चे अपने करियर को लेकर सोचना शुरू करते हैं, उस उम्र में लोहिया साइमन कमीशन का जमकर विरोध कर रहे थे।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब महात्मा गाँधी और बाकी बड़े नेता जेल में बंद कर दिए गए उस दौरान लोहिया ने आंदोलन को पूरे भारत में फ़ैलाने का काम किया। अपने साथियों के साथ खुफ़िया रेडियो चलाकर देश भर में क्रांति को फैलाने का काम किया। 1944 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसी दौरान उनके पिता की मौत हो गई लेकिन लोहिया ने अंग्रेज़ी सरकार की कृपा पर पेटोल पर छूटने से इनकार कर दिया।

Born: 23 March 1910,,
Died: 12 October 1967